उन माँ–बाप को समर्पित

जो बच्चों को सोता हुआ छोड़कर काम पर जाते हैं

दुनिया में 99.99 फीसदी इंसान ऐसे होते हैं, जो अपने काम में इतने व्यस्त होते हैं कि वे अपने बच्चों; परिवार; स्वास्थ्य और सामाजिक जिम्मेदारियों को नजरअन्दाज कर देते हैं और लापरवाही के साथ जिन्दगी की दौड़ में नाकामयाबी और मायूसी के अलावा कुछ भी हासिल नहीं करते। उनसे पूछने पर उनका जवाब यही होता है कि वे सब अपने परिवार और बच्चों के लिए ही तो कर रहे हैं। परन्तु अफसोस इस बात का है कि व्यावहारिक ज्ञान, वित्तीय ज्ञान और नैतिक शिक्षा की कमी के कारण उनका हाल तो जिन्दगी में कड़वाहट के अलावा कुछ भी नहीं। जिन्दगी के रचाए हुए सपने सिर्फ सपने बनकर अन्त में वृद्धाश्रम का रास्ता दिखा देते हैं।

दौलत कमाने की कोशिश में आज भागम-भाग की जिन्दगी में जब वो घर से बाहर निकलते हैं तो उनके बच्चे सो रहे होते हैं;—जब रात को वो लेट घर लौटते हैं तब भी वो सो रहे होते हैं। पचीस साल तक सोने का सिलसिला चलता रहता है। परन्तु उसके बाद एक दिन हम पाते हैं कि वे सभी बच्चे, हमें सोता हुआ छोड़कर––रात के अन्धेरे में––कहीं चले गए हैं अथवा किसी कुसंगत में फँस गए हैं। हमें अपनी जिन्दगी छोड़ने तक इस बात का तो पछतावा ही रहेगा कि आखिर हम—माँ-बाप—ने उनको अनुशासन में रखते हुए नैतिकता की शिक्षा क्यों नहीं दी? इसलिए हमारी जिन्दगी में सबसे ज्यादा अहमीयत कोई चीज रखती है तो वह है हमारे बच्चे और परिवार, जिनको हम सबसे ज्यादा नजरअंदाज करते हैं—बड़ी बेवकूफी की बात है।

माँ-बाप की ओर से—अपने बच्चों को सबसे बेशकीमती कोई चीज मिल सकती है तो वह है मजबूत बुनियाद और घर का माहौल। बच्चों की काबिलीयत बढ़ाने के लिए जरूरी है कि हम इन पर दुगुना समय लगावें और आधा पैसा। कच्ची उम्र में बच्चे अपने माँ-बाप के बताए हुए उसूलों को मान लेते हैं। उनको सोता हुआ छोड़कर दौलत कमाने निकल जावेंगे तो उनको जिम्मेदारी देकर तरक्की का रास्ता कौन सिखलाएगा।

चाणक्य ने कहा है—**वे माता शत्रु और पिता वैरी समान होते हैं जो बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं देते।**

हिन्दुस्तानी माता-पिता की ख्वाहिश होती है कि बच्चा उनसे बढ़कर निकले। हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ निकले। अगर वो आशाओं के अनुरूप खरा नहीं उतरता है तो सारा दोष बच्चों पर मढ़ देते हैं, जबकि है सब उल्टा। सारा दोष माता-पिता का होता है। बच्चा जब पैदा होता है तो कोरा कागज होता है। उसको महान् और अक्लमन्द बनाने का जिम्मा तो स्वयं उसके माता-पिता का ही है। संगीत के सात स्वर प्रकृति और स्वभाव में भिन्न-भिन्न होते हुए भी उनमें संगीतकार ही एक लय पैदा करता है। यह लय एक प्रकार का सामंजस्य ही है। बच्चों में भी ऐसे सामंजस्य पैदा करने की जरूरत होती है जो उसके माँ-बाप ही करते हैं।

माँ-बाप को बच्चे की नीवँ का महत्त्व नहीं भूलना चाहिए। ऊँची इमारतों की नीवँ का अस्तित्व नीवँ के उस पत्थर में है––जो बिना हिले-डुले उस ऊँची इमारत को थामे हुए है। अपनी जगह अडिग है।

बच्चा अपने माँ-बाप की कार्बन-कॉपी होता है। ऐसा नहीं होता कि आज का पैदाइशी बच्चा, कल पाँच फुट छः इंच का बड़ा आदमी बन जावे। बच्चों में चरित्र निर्माण, बौद्धिक ज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान—जिसमें ईमानदारी की जन्मघुट्टी मिलाई हुई हो—को कूट-कूट कर तैयार करना पड़ता है। और तैयारी होती है जन्म से। कोई भी माँ-बाप अचानक यह नहीं कह सकते कि हमें जो कुछ करना था––वह कर दिया, अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। बच्चों को तैयार करना पड़ता है—व्यवहार द्वारा, आचरण द्वारा, अनुभवों

(Experience) के हस्तान्तरण द्वारा। बच्चों पर विश्वास करें। उन पर जिम्मेदारी सौपें। ठोकर नहीं खायें इसलिए उन पर कड़ी नजर रखें। उसे समस्याओं से जूझने देवें, स्वयं समाधान खोजने देवें और अटक जावे तो मार्गदर्शन जरूर देवें। ये ही कुछ ऐसे गुर हैं जो बच्चों के नैतिक, बौद्धिक और व्यावहारिक विकास के लिए आवश्यक हैं। अन्त में बच्चों को कोई कहानी मत बनाओ बल्कि कहानी का नायक बनाओ, जो कहानी का आधार होता है।

कुदरत के कायदे-कानून एक जैसे हैं। अपने हिसाब से ही कुदरत इसको संचालित करती है। इन नियमों में चूक नहीं होती। कामयाब वही होता है जो इन नियमों को जानकर अक्लमन्दी के साथ खूबियों का इस्तेमाल करता हुआ कामयाबी की ओर मीलों आगे बढ़ जाता है।

अवसर हर इंसान के जीवन में आकर दस्तक देता है। किसी भी पल आकर वह आपका दरवाजा खटखटा सकता है। परन्तु बेवकूफ इंसान अपनी नाकाबिलीयत के कारण पकड़ने में चूक जाते हैं। ईश्वर इतना निर्दयी नहीं है कि किसी इंसान को कम, किसी को ज्यादा कामयाबी का अवसर प्रदान करे। एक ही समाज और परिवार में पले दो इंसानों में भी कामयाबी और काबिलीयत का फर्क इसलिए देखने को मिलता है कि उसमें से एक अक्लमन्द इंसान अवसरों को अपने नजरिए से पहचानते हुए पकड़कर आगे बढ़ जाता है और दूसरा इंसान मूर्खता के कारण चूक जाता है। लक्ष्य छोटा हो या बड़ा; इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता। अन्तर पड़ता है तो लक्ष्य के भेदने का; मुकाबले का; खूबियों का; हौसले का। छोटा लक्ष्य; बड़ा लक्ष्य बनाता है। यदि लगन, परिश्रम, एकाग्रता और अभ्यास के साथ अपने दिमाग को संतुलित और फोकस किया जावे तो कामयाबी निश्चित ही मिलेगी। जो लोग गरीब हैं उनकी गरीबी का कारण यह है कि वे भाग्य और भगवान के सहारे रहकर निठल्ले बन जाते हैं। अवसर उनका दरवाजा खटखटाकर वापिस चला जाता है—फिर लौटकर नहीं आता।

इसलिए जो आखिरी बात है—वह भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बच्चे की ललाट पर लिखी हुई रेखाएँ, माँ-बाप को चेतावनी देती हैं, 'अभी भी समय है, संभल जाओ, बिगड़ने के अलावा—बच्चे के भाग्य में कुछ नहीं बचेगा, इसलिए उसे सही ज्ञान का रास्ता दिखाओ।' बच्चे का गणित उसके हित और हक में कैसे जावे—यह देखना भी उन्हीं का काम है।

अक्लमन्द इंसानों की दलीलें थोथी नहीं हो सकती और ना ही उनका नजरिया और अनुभव थोथा होगा। यह सोचना भी मूर्खता होगी कि बच्चा रास्ता स्वयं ढूँढ़ लेगा। महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि आपको विरासत में क्या मिला? बल्कि महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप विरासत में क्या छोड़कर जा रहे हो? यदि आप अपनी संतान के लिए अपार दौलत छोड़कर जा रहे हो तो यह आपकी बड़ी भारी भूल होगी। क्योंकि इससे आपकी संतान को पूर्णता तो प्रदान नहीं हो रही है बल्कि अयोग्य ही बना रहे हो। यदि संतान सुयोग्य है तो उसे अति और अपार धन की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है तो उसको आकाश में 'ऊँची उड़ान' भरने की कला सिखाने की—जो सफल जिन्दगी के लिए कामयाबी का राज है।

—राम बजाज

ऊँची उड़ान 'एक कामयाबी' : राम बजाज